International Journal of Research in Social Sciences

Vol. 8 Issue 3, March 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

हिन्दी दलित साहित्य और रमणिका गुप्ता

डॉ. मुकुल कुमार
हिंदी शिक्षक, पेंग्विन पब्लिक स्कूल,
झपहाँ, मुजफ्फरपुर

हिन्दी उपन्यास लेखन के क्रम में 'दलित साहित्य' 80 के दशक में एक नई स्वरूप एवं सम्भावनाओं के साथ उभरा। हिन्दी दलित उपन्यास का मुख्य लक्ष्य अपनी संस्कृति, परम्परा और इतिहास में अपनी पहचान तथा अपनी अस्मिता की खोज करना जो समानता, बंधुता और स्वतंत्रता जैसे प्रजातांत्रिक मूल्यों पर आधारित है। हिन्दी दलित उपन्यास सामाजिक संरचना की धरातल में जाकर पूरे समाज की पड़ताल करता है और साथ ही उसमें छुपी हुई विसंगतयों को उजागर कर उसके प्रतिकार एवं परिष्कार का प्रयत्न भी करता है। हिन्दी दलित साहित्य उपन्यास के अंतर्गत दलित साहित्यकारों द्वारा अधिक मात्रा में दलित उपन्यास लिखे गए जिनमें कुछ चर्चित और सराहनीय उपन्यास हैं–'छप्पर', जयप्रकाश कर्दम, 'मुक्तिपूर्व', मोहनदास नैमिशराय, 'भूमिपुत्र', राणा प्रसाद, 'पहला खत', धर्मवीर, 'अमर ज्योति', डी.पी. वरुण, 'जस तस भई सबेर', सत्यप्रकाश, 'बंधनमुक्त', राम जी लाल सहायक, 'मिट्टी की सौगंध', प्रेम कपाड़िया, 'प्रस्थान', परदेशी राम वर्मा, 'डुब जाती है नदी', गुरुचरण सिंह, 'नरवानर', श्वारण कुमार लिम्बाले, 'सीता–मौसी', रमणिका गुप्ता।

हिन्दी साहित्य में उपन्यास लेखन की सुदीर्घ परम्परा रही है। वस्तुतः हिन्दी उपन्यास का आरंभ सन् 1870 ई. में पं. गौरीदत्त द्वारा रचित उपन्यास 'देवरानी जेठानी की कहानी' से माना जाता है, परन्तु अंग्रेजी ढंग का हिन्दी का पहला मौलिका उपन्यास 'परीक्षा गुरू' (श्रीनिवास दास) 1882 ई. में प्रकाशित हुआ। इसके बाद अब तक एक से बढ़कर एक उपन्यास लिखे गए। उपन्यास का शाब्दिक अर्थ है–समीप रखना। उपन्यास में मानव जीवन अपेक्षाकृत अधिक समीपता के साथ चित्रित होता है। अर्थात् इसमें जीवन की समग्रता का अंकन किया जाता है। हिन्दी उपन्यास कथा–कहानियों से होते हुए विभिन्न भागों में विभक्त होकर अपने ऊँचाईयों को प्राप्त किया।

विद्वानों ने उपन्यास लेखन परम्परा को रचना एवं रचना प्रक्रिया तथा सोच के अनुसार निम्न भागों में बाँटा है–सामाजिक उपन्यास, ऐयारी–तिलिस्मी उपन्यास, जासूसी उपन्यास, मनोविश्लेषणवादी उपन्यास, साम्यवादी उपन्यास, ऐतिहासिक उपन्यास, आंचलिक उपन्यास एवं दलित उपन्यास।रमणिका गुप्ता दलित उपन्यास लेखन की परम्परा को विस्तार देने वाली प्रमुख लेखिका हैं। इनकी प्रतिभा विलक्षण और संपादकीय दृष्टि तीक्ष्ण है। हिन्दी दलित साहित्य विमर्श की दृष्टि से रमणिका जी के दो उपन्यास अत्यंत मतहत्वपूर्ण हैं– 'सीता और मौसी'। ये दोनों उपन्यास दो अदिवासी महिलाओं की दास्तान हैं। रमणिका जी स्त्री–समस्या को गंभीरता से समझने वाली एक संवेदनशील लेखिका हैं, क्योंकि उन्होंने खुद औरत होने की वजह से इस दंश को झेला है। यह उपन्यास दबंग व्यक्तित्व एवं ओजस्वी संघर्ष की एक ऐसी गाथा है जिसमें समूची अस्तित्व चेतना को उजागर किया गया है। दोनों उपन्यास आदिवासी समाज के दो पहलू हैं। जिसमें एक तरफ आदिवासी स्त्रियों का शोषण, अत्याचार, अन्यास है तो दूसरी तरफ विस्थापन कर रहे आदिवासी अस्तित्व की पहचान एवं संस्कृति को बचाने का संघर्ष दिखता है।

रमणिका जी लिखती हैं–''अपनी अस्मिता बचाने हेतु स्त्रियाँ–विशेषकर आदिवासी स्त्रियाँ जोखिम पर जोखिम उठा कर जूझ रही थीं–कहीं व्यक्तिगत स्तर पर तो कहीं सामूहिक स्तर पर या संगठन के माध्यम से तो कहीं अपना नियति मान कर सह रही थीं। मूल्य बदल रहे थे। परिभाषाएँ या तो अर्थ खो चुकी थीं या उनके अर्थ बदल दिए गए थे। एक मुक्त समाज, जिसे सदियों पहले सभ्यता बाहर कर दिया गया था, वर्जनाओं, निषेधों, वंचनाओं और दर्प–दंभ–अहम् से भरे विभेदकारी, विशिष्टतावादी समाज–जो अब इसके जंगलों में घुस आया था–की जीवन शैली के रूबरू खड़ा नहीं रह पा रहा था। आदिवासी समाज की मुक्तता का अर्थ स्वच्छन्दता लगाया जा रहा था और उनकी स्वतंत्रता को कुत्सित दृष्टि से देखा जा रहा था। इसके भोलेपन, मासूमियत, सीधेपन और अज्ञानता के कारण लोग मनमाने ढंग से लूट मचाए हुए थे।''[1] आदिवासी स्त्रियों पर हो रहे अत्याचार और उसके शारीरिक शोषण के साथ ही उन स्त्रियों के जीवन में

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 3, March 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आनेवाले कई पुरुषों का चित्रण इन दोनों उपन्यासों में मिलता है। आदिवासी और दलित साहित्य की प्रमुख हस्ताक्षर रमणिका गुप्ता ने इस उपन्यास 'सीता–मौसी' के माध्यम से आज के जीवन की परिवर्त्तनशीलता और नारी संघर्ष के मूल्यों के यथार्थ चित्रण को दर्शाया है। यथार्थ की पीड़ा, नारी जीवन की अस्तित्वगत गहराई, विसंगति और अनुभूति की गहराई इस उपन्यास में दिखाई देती है।

अब हम यहाँ इस उपन्यास (सीता–मौसी) का अलग–अलग विश्लेषण करेंगे–'सीता' मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की पत्नी सीता राज्य की सुख–सुविधा के साथ जीवन यापन करती हुई, जब जंगल जाती हैं तो वहाँ पर होने वाले कष्टों का भी सामना करती है। और, सबसे बड़ी विपत्ति तो उस वक्त आती है जब सीता को रावण हर कर लंका ले जाता है। उस युग में भी सीता के ऊपर अत्याचार किये गए, जिसका वर्णन आदिकवि वाल्मीकि ने 'रामायण' में और भक्तिकालीन कवि तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' में किया है। रामायण युग की सीता से आधुनिक युग की सीता का चरित्र कोई पृथक नहीं है। रमणिका गुप्ता ने इस उपन्यास में जिस सीता का वर्णन किया है वह अकेली नहीं बल्कि आदिवासी समाज के हजारों सीता की वेदना, पीड़ा के साथ जीवन यापन कर रहे स्त्रियों का वर्णन किया है–''त्याग और तपस्या की प्रतीक सीता जब रामायण के युग से निकलकर आज के संघर्षों में भूख से जूझती हुई जवान होती है तो वह सर्वहारा वर्ग के लिए आधुनिक रावणों से लड़ती है। आज की सीता जूझी है हर रिश्ते से, उमर के हर मोड़ पर। उसने मौत से छीना है जिन्दगी को।

सीता अब अपने से बाहर खड़ी सीताओं के लिए लड़ने लगी है। सीता अब एक कतार है, एक शृंखला है, एक पांत है। पांत–जो चुप थी आज तक, अब बोलने लगी है। पांत–जो जड़ थी सदियों से, अब फुंकारने लगी है। आज की सीता अपने बदलाव की बाढ़ में गली–सड़ी मानसिकता को बहाए ले जा रही है, समुद्र के गर्त में दफनाने के लिए। वह इंतजार में है कि कल जो सूरज निकले, जो हवा बहे, वह उस जैसी सीताओं के हिस्से में भी आए जिससे वे वंचित रही हैं, सभ्यता के आने के बाद से।''[2] सीता अपनी चार बहनों, माता–पिता और चाचा के साथ राँची के खूँटी गाँव में (1958 ई.) अवस्थित राजा साहब के केदला खादान में काम करती थी। राजा साहब अपने क्षेत्र में रहने और काम करने वाले लोगों को कभी कभार हैलीकाप्टर से दर्शन दे देते थे। और सभी आदिवासी प्रजा उस समय 'साष्टांग प्रणाम–धरती पर लेटकर करते। राजा की पत्नी पाँच वर्षों में एक बार लोगों के बीच सिन्दूर बाँटती और अपने पति के लिए वोट मांगती थी। रमणिका जी लिखती हैं–''पूरे राज–पाट जमीन–जंगल, आकाश, आग–पानी सभी तो राजा साहब के वश में है।''[3] चारों बहनें यौवन को पूर्णतः प्राप्त कर चुकी थीं। चारों साथ–साथ चलतीं। उन चारों के सौन्दर्य से काम करने वाले मजदूर और ठेकेदार सब–के–सब उनके तरफ आकर्षित हो जाते थे। ये सब काम करने में अत्यंत परिश्रमी थीं, परन्तु ठेकेदारों और साहबों के द्वारा वहाँ पर कार्यरत सभी मजदूरों का हमेशा शोषण होता रहता था।

रमणिका जी ने लिखा है ''मजदूर कितनी भी एकता कर ले पर केदला कोलयरी में ठकेदार का व्यूह महाभारत के व्यूह से भी अधिक सुदृढ़ था। अर्जुन भी शायद तोड़ न पाता उसे।''[4] समय बीतता है, सीता की शादी हो जाती है। वह दो बच्चों की माँ बनती है, फिर भी कार्य कुशलता उसकी बरकरार रहती है। परन्तु, मजदूरों या कामगारों का कोई समय न हीं बदला, दिन–प्रतिदिन समस्याएँ बढ़ ही रही थीं। वहाँ काम करने वाले मजदूरों को काम के बदले मिलने वाली सुविधाओं से वंचित किया जा रहा था। इसी बीच जब कोई मजदूर किसी कारणवश मरता और उसकी आंतरिक जाँच होती तो शरीर के अंदर से कोयला का कण निकलता। परन्तु, मजदूर अपनी पेट की आग को शांत करने के लिए कार्य में तल्लीन रहते थे। इसी बीच सीता के जीवन में भी तूफान आ जाता है। वह अपने पति के अत्याचार और शोषण को सहन करती है। कुछ दिनों के बाद सीता का पति उसे छोड़कर चला जाता है। वह अब इस अंधकारमयी जीवन से निकलने और बच्चों के संबंध में सोचने लगती है। धीरे–धीरे दुःख कम होता है और सीता के जीवन में एक नई सुबह की शुरूआत होती है–यासीन मियाँ से। दोनों आदिवासी रीति–रिवाज से विवाह कर के साथ रहने लगते हैं। 1973 ई. में सीता को यासीन मियां से बेटी होती है। समय के साथ यासीन मिया भी सीता को धोखा देकर अपनी विरादरी में किसी स्त्री से शादी कर लेता है। और, सीता और उसके बच्चे को छोड़ देता है। अब फिर एक बार सीता उसी मोड़ पर खड़ी है। उस पर मुसीबतों का पहाड़ आ खड़ा होता है। एक दूसरा पक्ष है–सीता बहुत पहले से ही युनियन बनाकर मजदूरों की सुख–सुविधा हेतु आन्दोलन चलाती रही

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 3, March 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

है। और, उसके कारण मजदूरों को थोड़ी–बहुत सुविधाएँ भी मिलती रही है। सीता अब केवल अपने लिए ही न हीं, बल्कि अपने समाज के लिए जीना चाहती,.... लड़ना चाहती थी। मजदूरों के लिए हमेशा राजनैतिक षड्यंत्र होता, साथ ही कोलयरी अब सरकार के अधीन हो जाती है। वहाँ पर ठेकेदार या उच्च पद पर कार्य करने वाले लोग अपने नाते–रिश्तेदारों को नौकरी दिलाने लगते हैं, जिसने कभी वहाँ काम तो क्या मुँह भी न देखा हो। रमणिका जी के शब्दों में सीता का कहना है–''काहे नहीं एक बार सभै औरतवन के जुटा के सभी एम.डी. के रांची जाय के घेरल जाय–औरतवन के बदले औरत के ही नौकरी देवे पर लगल रोक के हटावे खातर। पहलकी के रहते दूसर डौकी (पत्नी) लाये वाले मरद की नौकरी से हटाय खातर, उकर नौकरी उकर डौकी को दिलवाये के खातर, बचपन के देख–रेख के खातिर, काम के टैम में दाई–नर्स के इंतजाम करे की माँग रखल जाए के खातिर।''[5] सीता को अपने जीवन के हर मोड़ पर दुःखों का सामना करना पड़ा है। फिर भी वह अपने साहस और परिश्रम के बल पर अपने जीवन को आगे बढ़ाती है। पुरुषों के द्वारा दी गई वेदना की आग में तपकर वह समाज को मार्ग दिखानेवाली कुंद बन जाती है। अब वह नहीं चाहती है कि फिर कोई दूसरी सीता इस वेदना को झेले, जिसे उसने स्वयं झेला है। वर्तमान समय में हजारों ऐसी सीताएँ एक जमात में, भीड़ इकट्ठी कर खड़ी हैं। 'मौसी' अपने साथ अपने भतीजा मोहन को रखती है। मौसी का जीवन हमेशा संघर्षपूर्ण रहा है। वह प्रतिदिन जंगल में जाती, लकड़ी काटती और शाम को शहर जाकर बेचती, जिससे किसी तरह गुजर हो जाता था। बाद में जंगल के सिपाहियों का अत्याचार होने लगा। वे औरतों का शोषण व लोभ, औरतों पर जुर्म, कृत्याचार करने लगे। फिर भी औरत अपनी जीविका चलाने हेतु सिपाहियों को स्वयं को समर्पित कर देती, लेकिन लकड़ी काटकर अपने परिवार का परवरिश करती। इसी बीच मौसी को एक रोज लकड़ी बेचकर वापस आने में देर हो गई और वापस गाँव आने के लिए गाड़ी नहीं मिली। जाड़े के दिनों में अपनी प्रतिष्ठा और स्वयं को ठण्ढ से बचाने के लिए मौसी मस्जिद के बरामदे पर बैठ जाती है। तभी वहाँ आए एक युवक सलीम से उसकी भेंट होती है। वह ट्रक चलाता है। सलीम मौसी को अपने घर ले जाता है। धीरे–धीरे यह सिलसिला बढ़ता जाता है और सलीम मौसी को अच्छा लगने लगा था। दोनों के बीच आकर्षण बढ़ रहा था, एक दूसरे को कभी–कभी समर्पित भी हो जाते थे। परन्तु परिस्थितियाँ बदल अचानक बदल जाती हैं, जो मौसी कभी सलीम के साथ आलिंगन करती, वह अब उसके अब्बा (पिता) की पत्नी बनायी जाती है। वर्ष बीतता है। अब सीलम उस वेदना को भूलने की कोशिश करते हुए निकाह कर के घर में पत्नी लाता है। मौसी सलीम का छोटा भाई (जिसे उसकी माँ ने जन्म देते हुए दुनिया छोड़ गयी थी) को उसकी पत्नी को सौंपकर अपने घर वापस आ जाती है। अब मौसी मोहन के साथ घर पर रहने लगती है। फिर मौसी के लिए नेताजी का प्रस्ताव आता है। वह नई शर्तों के साथ नेताजी के यहाँ रहने लगती है। बाद में नेताजी अपना घर छोड़कर गाँव वापस आ जाते हैं। मौसी फिर से अकेले दुःखी रहने लगती है। भईया–भाभी ने भी मौसी से हाथ खड़े कर लिए थे तो मौसी मोहन के साथ रहने लगती है। तभी उसके जीवन में माधो आता है। माधो के साथ महुआ चुआती तथा किसी तरह अपना परवरिश करती है। तभी समाज में माधो और मौसी को लेकर मुठभेड़ हो जाती है। माधो इससे आहत होकर चला जाता है और मौसी फिर अकेले रह जाती हैं।

रमणिका गुप्ता ने मौसी के माध्यम से कहलवाया है ''क्या मोर मन नाय हो सकत ब्याह करके बस जाय के ? काहे बिरादरी तब सहारा नाय देलके जब मौलवी मरे पर घर लौटल रही थी मैं ? ठीके कहत रहीं रेणुका जी, पैसा बचाय के रख। अपने पांव पर खड़ी हो जा, तो कोइयो कुछ नाय बोलते ? अब सारा पैसा सिराय (खत्म) हो गेले, तो संभै हमर बाप बन रहल जहै। तब बाप बनेके कोउओ तैयार न हलै, जब भगवान सिंह पैसा देके हमर के किने (खरीदने) खातर गाँव आयल रहे। अब मौलवी हमर संग निकाह पढ़ाय लेल, तभी भी कोऊ ना बोलले?''[6] एक बार फिर से भगवान सिंह से मौसी की मुलाकात होती है और दोनों साथ–साथ जीने मरने के वादे के साथ रहने लगते हैं। यहाँ पर अब मौसी अपने स्वाभिमान के साथ खड़ी होती है और भगवान सिंह के समक्ष अपना प्रस्ताव रखती है–''तो चल, तू और हम दोनों मजदूरी करके, खटके खायब। न तू ठाकुर न हम मुंडा। न तू बड़ जात–न हम छोट जात। दोनों मजूर। हम तोर कमाई पर न रहब। हम अपनेई कमायब। मंजूर हय तो बोला।''[7] क्षण भर के लिए तो भगवान सिंह सोच में पड़ गया। परंतु फिर उन्होंने मंजूरी दे दी। अब दोनों अपना श्रम बेचने लगे, दोनों मजदूर की कतार में खड़े हो गये। दोनों की अब सिर्फ–व–सिर्फ एक ही जाति रह गई मजदूर की। मौसी अब काफी संघर्ष के बाद

Vol. 8 Issue 3, March 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अंततः जीवन साथी को प्राप्त कर पाती है, जो उसे हर एक परिस्थिति में खुश रखता है, अपनाता है। अब मौसी किसी ठाकुर साहब या नेताजी की रखनी नहीं बल्कि भगवान सिंह जैसे मजदूर की जीवन–संगिनी बनकर जीवन यापन कर रही है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि रमणिका गुप्ता अत्यंत संवेदनशील कथाकार हैं। स्त्री–विमर्श को लेकर इतनी गंभीरता और सतत साहित्य की विभिन्न विधाओं में प्रस्तुत रचनाशीलता स्पष्ट हो चुकी है। 'सीता और मौसी' दोनों उपन्यास कथ्य, शिल्प, भाषा, संवाद की दृष्टि से हिन्दी दलित उपन्यास के क्षेत्र में सार्थक हस्तक्षेप करती है। निश्चित रूप से रमणिका गुप्ता की रचनाशीलता नये दलित लेखकों को न सिर्फ प्रेरणा देती है, बल्कि नवीन मूल्यों से रू–ब–रू होने की ताकत भी देती है।

संदर्भ :

1. 'सीता–मौसी', रमणिका गुप्ता, ज्योतिलोक प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 01
2. उपरिवत्, पृ. 05
3. उपरिवत्, पृ. 09
4. उपरिवत्, पृ. 16
5. उपरिवत्, पृ. 91
6. उपरिवत्, पृ. 100
7. उपरिवत्, पृ. 174

❐